वेदोंमेंपर्यावरण संरक्षण

डा. इंद्र नारायण झा, व्याख्याता(व्याकरण)

राज.शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, चेचट

iLrkouk

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वोत्कृष्ट संस्कृति है। अपौरूषेय, अनादि वेद आध्यत्मिक व वैज्ञानिक ज्ञानकोष के उपादान है। वैदिक मनीषियों ने सृष्टि के गहनतम रहस्यों का उद्घाटन कर उसके गूढ़ व गंभीर विज्ञान को (आध्यात्मिकता का समावेष करते हुए) वैदिक मंत्रों में स्थापित किया। वैदिक ऋषि ही विश्व के प्राचीनतम व श्रेष्ठतम oKkfud Fk] जिन्होंने सृष्टि के प्रत्येक तत्व व प्रत्येक क्रिया का वैज्ञानिक पर्यवेक्षण किया। वैदिक मनीषी इन प्रकृति तत्वों की अपरिचित शक्ति तथा उपादेयता से पूर्ण परिचित थे। प्रकृति भारतीयों d fy, lnk l ituh; jgh gA Hkkjrh; lLdfr u pru gh ugh vfir tM dk Hkh सम्मान प्रदान कर उनकी उपादेयता का महत्व दर्शाया है।

सूर्य–उपासना, चन्द्र–दर्शन, पूजन, वृक्षों, नदियों, सागरों व पर्वतों के प्रति पुनीत व पूज्य Hkko Hkkjrh; lLdfr dh vnHkr nu gA ikdfrd l lk/kuk dk n{kre o fgrdkjh mi;kx rFkk ekuo o idfr d e/; lUryu o lketL; gh i;koj.k & lj{k.k gA

iFoh %

पृथ्वी सौरमण्डल का विशिष्ट गृह है जिस पर जीवन है, जड़–चेतन प्रतिष्ठित है, समस्त ikf.k;k dh vkJ; nk=h g rFkk foLrr gA iFkekRifFkohR;kg % ¼fu0 1 % 4 % 2½ ofnd iFoh lDr o Hkfe lDr i;koj.k lj{ण के लिए निर्देषित करते है। अथर्ववेद का माता भूमि i=ksge ifFkR;k d mnxkj e Hkfe dk ekr:i ekuk x;k gA vFkoon dk lEi.k पृथ्वीसूक्त पृथ्वी के साथ मानव के आत्मीय, संवेदनशील व दायित्वपूर्ण सम्बन्ध होने का निर्देष करता है। पृथ्वीः पूः च उर्वी भव

vFkoon d ckjgo eMy d iFoh lDr d lHkh 63 e=k e iFoh dk x.kxku fd;k x;k है तथा मनुष्य को पृथ्वी की रक्षा का दायित्व बोध करवाया गया है।

;rr Hkfe ---------- ân;efie A ¼v·o·12@01@11½

g भूमि ! तेरा जो भाग मैं खोदूँ वह पुनः शीघ्र उग जावें। तेरे मर्मस्थल पर मैं चोट ना कर ikÅ rFkk rj ân; dk gkfu uk igpk ikÅA

पृथ्वी के प्रति मानव की इतनी मार्मिक संवेदना, भूमि संरक्षण का मार्ग प्रशस्त करती है।

fxj;Lr iorRkk fgeoUrks j.;;r iFoh L;ku eLrq A

बभ्रुं कृशणां रोहिणीं वि□वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथ्वी मिन्द्र गुप्ताम्

vthrsgr v{krks ध्यशठां पृथिवीमहम्।। (अ-o-12@01@11½

ekrk पृथ्वी को नमस्तकार ! हे माता पृथ्वी । आपके विशाल पर्वत, हिम, आच्छादित शिखर, महन वन हमें शीतलता व सुखानुभूति दें। आप विश्वरूपा (भूरे पर्वत, रक्ति पुष्प, नीलवर्ण, lenz g ij bu lHkh foLe;dkjh :iks e vki /ko g] bUn }kjk ljf{kr gA vkidh vpy vVV vfofttr uho ij e n<rkiod [kMk jgA

iFoh ekrek fgalh ek vg RokeA ¼;-o-10@23½

g iFoh uk r gekj ifr fgalk dj] uk ge rj ifr fgalk djA

यहां हिंसा से आशय मित व स्वार्थ पूर्ण दोहन से है। भूमि हमारी माता है। इससे हिंसा djuk vFkok bl ihfMr djuk vijk/k gA

;ton e iFoh dk rkRrk;uh vFkkr Åtk nu okyh] foÙkk;uh vFkkr /ku&lEink inku dju okyh vkfn miekvk l lckf/kr fd;k x;k gA

rkRrk;uh efl fork;uh eL;urkUek ukfFkrknorkUek 0;fFkrkrA ¼;-o-5@9½

eYo fcHkrh xq:HknA ¼v-o-12@1@48½

न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण नियम के प्रतिपादन से पूर्व ही ऋषि अथर्वा ने पृथ्वी द्वारा गुरू पदार्थों को अपनी ओर खींचने की शक्ति का प्रतिपादन अथर्ववेद में कर दिया था। इसे चेतन को जीवनी शक्ति प्रदान करने वाली भी कहा गया है। इन सूक्तें से iFoh dk ekuo thou e egRo o mikn;rk iekf.kr gkrh gA iFoh dh xgk e Lo.k&ef.k jRu vkfn dh ipjrk gA ijUr bu [kfutk dk [kuu Hkh l0;ofLFkr :i l fd;k जाना निर्देषित है जिससे प्रसन्नचित, पृथ्वी होंवे।

[kfutk dh ikflr gr vlhfer] vHk;kfnr[kuu ifØ;k l iFoh d eeLFkyk ij pkV igprh g rFkk ifj.kke Lo:i tylyoku] vfXu iTtoyu] HkdEi] HkL[kyu vkfn आपदाएं व त्रासदियाँ मानव जीवन को नष्ट कर देती है।

migrkifFkoh ekrk ¼; tqoZn 1@10½

भूमि सूक्त में भूमि की विशेषताओं व महत्व पर प्रकाश Mkyk x;k gA bl lcdh ekrk dgk x;k g ekuo dk Lo; d vfLrRo d fy, bldh lok djuh pkfg, vFkkr i;koj.k lj{k.k dk i;kl djuk pkfg, rHkh Hkfe ekuo dh fgrdkfj.kh] l[kdkfj.kh gkxhA ;fn ekuo ekr Lo:ik Hkfe d ifr v/ke o fglk dk Hkko j[kxk rk ;g Hkfe मानव को धारण करने में सक्षम नहीं होगी। जो समाज भूमि को प्रदूषित करता है भूमि उसे अप्राप्य हो जाती है। जो भूमि को क्षीण करते है, प्रदूषित करते हैं भूमि उन्हें उसी प्रकार दंडित करती है, जिस प्रकार अश्व धूल को झाड़कर फेंक देता है। स्पष्ट है कि पृथ्वी dk आस्तित्व, विकास व सरंक्षण शाश्वत जीवन मूल्यों व वैदिक जीवन पद्धति से ही सम्भव है। bl idkj Hkfe lDr o iFoh lDr i;koj.k lj{k.k o ikfjfLFkfrdh d lUryu o सुचारू संचालन हेतु मानव को निर्देषित करते है तथा पृथ्वि के प्रति आत्मीयता, समर्पण, lonuk] rknkत्म्यता दायित्व–निर्वहन व संरक्षण के संदेषों व निर्देषों से परिपूर्ण है तथा ekuo dk vfHkifjr djr gA

lw;Z

सूर्य द्युस्थान के प्रमुख देवता है। सूर्य ऊर्जा का स्त्रोत व समस्त पर्यावरण का पोषक है। l;Z tk rki iFoh rd vkrk g] mlh rki l LFkkoj] txe vkfn thok dk vfLrRo gA blhfy, l;Z dk py&vpy txr dh vkRek crk;k x;k gA

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थशश्च (ऋ-1@115@1½

bl idkj leLr cãkM e l;Z dh dnh; lrk dk LFkkfir fd;k x;k gA

m|kUu;% --- **नाशय। (ऋग्वेद1/50/11)**

मित्रों द्वारा सत्कार योग्य, सभी औषधियों व रोग निवारक विधाओं के ज्ञाता विद्वान सूर्य ! mfnr gk] Åij xxu e p<dj eu] âदय, चर्म व नेत्रों के समस्त रोग नष्ट करें। i;koj.k d vfLrRo o bld lj{k.k e l;Z dh vuU; mikn;rk Lor% fl) gA पर्यावरण के पोषक व रक्षक होने से ही इसे पूषन् व मित्र कहा गया है।

यद् रश्मिपोशं पुश्यति तत् पूशा भवति ¼;k-fu-12@6@2½

मनुष्य के नेत्रों के साथ सूर्य का विशेष सम्बन्ध है क्योंकि वहीं नेत्रों को दर्शन शक्ति प्रदान djrk gA

सूर्य किरणों में रोग निवारक शक्ति भी पाई जाती है। भेषजीम् सूर्य के सूर्यत्व व महात्म्य से gh ekuo fpjk; o fujkxh gkrk gA l;Z d iHkाव से कुष्ठ गण्डमाला, पीलिया ân; jkx] तपेदिक, चर्म रोग आदि अनेक समूल नष्ट होते है।

अथर्ववेद में सूर्य को समस्त सृष्टि का प्राद्‌र्भाव कर्ता व अवलम्बन कारी घोषित किया गया gA

lok vrfj{kkn tk;r rLeknUrfj{k tk;rA ¼v-i- 13@7@13½

mHkkE;k no lfor% ifo=.k lou pA

मां पुनीहि विश्वतः ।। यजु- ¼19@43½

सूर्य की तेजस्वी रश्मियाँ पृथ्वी से जल का शोषण कर उसका पान करती है तथा पुनः ty l Hkfe dk fHkxk nrh gA

कृशण नियानं -- 0;/kr A ¼_-o- 1@164@4½
onk e ; l;&j**श्मियाँ सर्वश्रेश्ठ मानी गई है।**

स्वयं भूरसि श्रेश्ठो रश्मि%A ¼;-o-2@26½

सूर्यरश्मियाँ न केवल मानव अपितु संपूर्ण जीवों व पर्यावरण को भी पुष्ट करती है तथा पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले रोगाणुओं, कीटाणुओं व जीवाणुओं को भी नष्ट करती है।

6हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय।

वर्तमान वैज्ञानिक शोध सूर्य की अपार ऊर्जा के उपयोग एवं ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता ij cy nr gA ofnd vuI/kku Hkh lkj Åtk d mi;kx dk vuekfnr djrk g ijUr सूर्य की पवित्रता एवं एतदर्थ समस्त प्राकृतिक तत्वों की परिशुद्‌) ij Hkh cy nrk gA

ty

जल जीवधारियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण व अत्यावश्यक है। जल से ही जीवन का vfLrRo gA onk e bl thok] lthok vkfn miek inku dh xb g ty dk ekrrY; egRo nr g, lokifj LFkku fn;k x;k gA

vEc;k ;UR;/ofHk tke;k v/ojh;rkeA ¼v-o-1@4@1½

vkik vLeku ekrj% ¼v-o-6@5@2½

जल में माधूर्य, भेषज, प्रदूषण नाषक, रक्षाकारक गुण होने से इसे अमृततुल्य माना गया है।

यद्‌ देवा अदः सलिले संरब्धा अतिश्ठत्‌।
अर्थात्‌ सभी देव जल में ही प्रतिश्ठित है।
शिवा नः सन्तु वार्शिकी : । (अ-o- 1@6@4½

वर्षाके जल हमारे लिए कल्याणकारी हो। वर्षा जल को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए उसे अमृत रस L=kr dgk x;k gA

ek vkik fgl h% AA ¼;-o-6@22½

जल को नष्ट ना करने एवं उसे शुद्ध रखने का उपदेष किया गया है।

onk में ना केवल पेयजल अपितु सभी प्रकार के जलों को शुद्ध रखने पर बल दिया गया gA

भां त आपो हैमवतीः भामु ते सन्तूत्स्याः ।

भां ते सनिश्यदा आपः भामु ते सन्तु वर्श्याः ।।

भां त आपो धन्वन्याः भां ते सन्त्वनूश्याः ।
भां ते खनित्रिमा आपः भां याः कम्भेमिराभृताः।। (v-o-1@6@4½ ¼v-o-19@2@1&2½

हिमालय के हिमरूपी जल, भूमि फोड़कर निकलने वाले चश्मे, सदा प्रवाहमान जल, वर्षा ty e:LFkyh; ty] vui ty] [kfut l ikIr uydi d ty] dEHkk e j[k ty सभी को शुद्ध–शान्त रहने की प्रार्थना की गई है।

यन्नदीषु यदोषधीभ्यः परिजायते विषम्।

विश्वेदेवा निरितस्तत्सुवन्तु।

अर्थात् यदि नदियों का जल प्रदूषित अथवा विषैल हो जाये तो विद्वतजन मिलकर उसे दूर करें, शुद्ध करें। वेदों में वर्षा के जल को श्रेष्ठतम माना गया है। वर्षा–जल स्वर्ण के समान चमकीले वर्ण वाला शुद्ध, पवित्र है। इसे हिरण्यवkk dgk x;k gA vFkoon dk पर्जन्य सूक्त भी जलीय चेतनाका उत्कृष्ट उदाहरण है।

मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु (अ-o- 4@15@7½

भुद्धाः सतीस्ताउ भुम्भन्त एव ता नः स्वर्गमभि लोंक नयन्तु । (अ-o- 12@3@26½

अर्थात् भुद्ध जल समस्त पर्यावरण को भुद्ध कर देते है।

जल में मनुष्य को स्वस्थ, सौम्य, मेघावान् दीघायु बनाने की शक्ति निहित है। जल को समस्त रोगों की औषधि कहा गया है।

भिषजां सुभिषतमाः (अ-o- 6@24@12½

ऋग्वेदीय मन्त्र 'आपो अमीवचातनी' अमीबायोसिस रोग–नाश हेतु स्वच्छ जल की vfuok;rk ij tkj nrk gA ¼_-o- 10@137@6½

इस प्रकार प्रमाणित है कि वेदों में जल की पूर्णतः शुद्धि की कामना की गई है। जल को दूषित ना करते हुए, उसके प्रति सम्मान व कृतज्ञता का भाव अभिव्यक्त किया गया है। यहाँ तक कि जलाशय के किनारे लगे वृक्षों को भी काटने का निषेध है। यदर्णसं मोषथा o{k ¼_-o- 5@54@6½

वेदों में व्यक्त जल–संरक्षण व शुद्धि सम्बन्धी निर्देशों का अनुकरण व पालन करके ही हम ty lj{k.k dj ldrs gA

ok;q

iz.kks ok;q% A ¼r-l- 2-1-1-2½ ¼xks-czk-2-1-26½
जीवन के लिए आवश्यक ऑक्सीजन को प्राण वायु कहा गया।
ueLrs ok;ks -- rUekeo;A ¼_-o- 1@90@9½ ¼;-o-36@9½
vFkkZr ok;q dk ueLdkj gA vki izR;{k cge gA vki gekjh j{kk djA

वायु पर्यावरण को पोषित व रक्षित करती है। वायु के दूषित होने से मानव व उसका lEiw.k i;kZoj.k दुष्प्रभावित होता है। वायु विश्वभेषज है, समस्त व्याधियों को हरने वाली औषधियों को पुष्ठ करने वाला है। वायु में अमृतकोष है, जो रोगाणुओं का नाश करता है। शुद्ध वायु आरोग्य वर्धक गुणकारक होती है।

यददो वात ते गृहेऽमतृस्य निधिर्हितः।

rrks uks nsfg thols AA ¼_-10@186@3½

हे वायु ! तेरे गृह में रखी अमृत निधि का कुछ अंश हमें भी दे जिससे हम दीर्घजीवी हो। वायु हमें ऐसी औषधि प्रदान करे जो हृदय के लिए शांतिकारक व आरोग्यकारक हो।

नमस्तेok;ks]Roeoizr;{kcgekfl]

त्वामेवप्रत्यक्षब्रह्मवदिष्यामि*rUekeor*¼_-o-1@90@9½

ou lja{k.k

oreku e ekuo vk|kfxdj.k dk iFkfedrk n tgk o{kk dh vfu;f=r कटाई कर वनों को अतिषप्त कर रहा है, वहीं वेदों ने वृक्षों को भी पूज्य मानते हुए उन्हें ueu fd;k gA

'नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेम्यो वनानां ir;s ue%A* ¼;-o- 16@17½

onk u o{kkfn dk gh ugh vfir lEi.k ou lEink] ouLifr txr o mud lj{kdk dk Hkh oUnu itu fd;k gA oulEink d ifr drKrk dk Hkko 0;Dr fd;k x;k gA frLrkfnokfl i ------------------------------------- देण्योशधे । (अ-o- 4@4@20½

_Xonh; vj.; lDr i;koj.k lj{k.k rFkk okuLifrd pruk dk vfHkij.k gA ble ouLifr;k] o{kk d mi;kx o egRo dk foopu gA _Xonh; vj.; lDr e ouk dh Lo;eo of) dh dkeuk dh xb gA

अरण्यान्यरण्यान्सो या प्रेव नश्यसि

ou ,o ou mRikn rHkh ikIr gk ldr g tc budk lj{k.k o lo/ku fd;k tk;A ekuo thou gr ou ,o o{kk dh vfuok;rk Lor% fl) gA

vktxfU/k lijfHk --- ¼_-o- 10]146]6½

भूमि, पर्वत तथा जलाशयों के निकट वृक्षादि vfuok; gA budk lj{k.k o lo/ku gkuk चाहिए पर्यावरण शुद्धि में इनकी अहम भूमिका होती है क्योंकि ये वायु को शोधित करते है, वृष्टि में भूमिका निभाते है तथा भू संरक्षण हेतु भी महत्वपूर्ण है।

oukfu u% itfgrkuh ¼_-o- 8@1@13½ _Xon e ok;q ls Hkh ikFkuk dh xb gA fd o{kk] [krk dk uk mtkM+A ;RlheUr u /kuFk A ¼_-o- 1@30@6½

ek dkdEchjen cgk ouLifreA

g fo}kuk dkd ! vkfn if{k;k d vkJ; o{kk dk er dkVkA

o{k o ouk d ifr onk e drKrk o vkReh;rk 0;Dr dh xb gA ouLifr;k d ifr lei.k Hkko onk dh nu gA

vfXugk=}kjk i;koj.k शुद्धिकरण

rvkoo=uRlnuknrL;kfnn?kruifFkoh0;?krAA¼_-o-1@164@47½

अग्निहोत्र अर्थात् यज्ञ को वेदों में पर्यावरण शुद्धि हेतु सर्वोत्कृष्ट साधन बताया गया है। पंचयज्ञों में से देवयज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र को सर्वप्रमुख यज्ञ माना गया है। शुद्ध ध्रुव, सुगन्धित वायुशोधक व रोगनिवारक द्रव्यों की आहुति द्वारा अग्निहोत्र सम्पन्न किया जाता gA ;g पूर्णतः वैज्ञानिक व शोधक प्रक्रिया है। मन्त्रपूर्वक व धार्मिक विधि अनुसार यही प्रक्रिया सम्पन्न किए जाने पर वह आध्यात्मिक परिलक्षित होती है क्योंकि वह शुद्धि के साथ ikdfrd rRok d pru Lo:i vFkkr mudh Åtk ij Hkh iHkko Mkyrh gA

vUuknHkofUr Hkkrkfu itU;knUu lEHko% A

;KknHkofr itU;k ;K% de leqnHko% A

यज्ञ से विशुद्ध वर्षा जल, अन्न, सुस्वास्थ्य, धनधान्य व समृद्धि प्राप्त होती है।

'कृशिश्च में यज्ञेन कल्पताम्' ।

'वृश्टिश्च में यज्ञेन कल्पताम्' । (य-o-18@9½

यज्ञ द्वारा कृशि करो। यज्ञ द्वारा वर्शा करो।
;K e gfo d mi;kग से औषधीय धूम वायु की शुद्धि करते हैं तथा वृष्टि में सहायता djr gA ftl l vf/kd ek=k e o x.korki.k /kkU; o vukt mRiUu gkrk gA ;K dh भस्म से पृथ्वी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है। कृषि क्षेत्र में पोलैंड, आयरलैंड में यज्ञ के lQy ijh{k.k fd, x, gA okशिंगटन में अग्निहोत्र वि-fo- किसानों को यज्ञ द्वारा कृषि का प्रशिक्षण देता है।

वर्षेष्टि यज्ञ द्वारा इच्छित वृष्टि भी संभव है। क्योंकि हवि की आहुति से लाभकारी गैसें वायुमंडल में व्याप्त हो जाती है और मेध्यता अर्थात् वर्षा करवाती है। इस प्रकार यज्ञ वर्षण rFkk ,rदर्थ जल–चक्र के सुचारू नियमन हेतु आवश्यक है।
;KkfXu l fofo/k jkxk d jkxk.k&dhVk.k lekIr gkr gA jkt;{ek [kk[kh] Toj o मानसिक रोगों का यज्ञ द्वारा शमन होने के प्रयोग सफल सिद्ध हुए है। टाइफाइड, क्षय, ppd] gtk vkfn jkxk e Hkh jkxk.k ;K }kjk iर्णतः नष्ट हो जाते है।

प्रयोगों में यज्ञ द्वारा वायुमंडल में हानिकारक गैसों की मात्रा में कमी की भी पुष्टि हुई है।

निश्कर्श
वेद धर्म, आस्था एवं आध्यात्मिकता का विषय ना होकर पूर्णतः वैज्ञानिक है, सार्वकालिक वश हैं तथा आज भी पूर्णतः प्रासंगिक है। वेद व संस्कृति से दूर हुए मानव ने स्वार्थवंश पर्यावरण में जो असन्तुलन उत्पन्न किया है, उसी का दुष्परिणाम प्राकृतिक आपदाओं व i;koj.k lकट के रूप में विश्व के समक्ष उपस्थित है। वेद प्राकृतिक तथा गुरूस्वरूप होने

से इस चुनौती से उबरने में हमारा मार्गनिर्देशन करते है। वैदिक संस्कृति के पालन व vkpj.k l gh LoPN] LoLFk] lkE;] lrfyr] fgrdkjh i;koj.k gh iu% LFkkiuk lHko gA

पर्यावरण शोधन हेतु वेद हमें जागरूक करते है तथा वनस्पति उगाने, सूर्य रश्मियों के उपयोग व अग्निहोत्र कर्म हेतु उपदिष्ट करते है।

oreku Hkkxokn d bl oreku o rFkkdfFkr foKku o rduhdh d bl ;x e ekuo वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा से परे रूप तक सीमित हो रहा है। स्वार्थ के वशीHkr ekuo ने प्राकृतिक सम्पदा को विनाश के कगार पर ला दिया है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से आज पूरा विश्व ग्रस्त है तथा अनेकानेक उपायों के पश्चात् भी इसके निराकरण सम्भव tku ugh iMrkA ,l e i;koj.k fpUru d

bl i;koj.k lj{k.k dk ey vk/kkj idfr iरूष का आत्मीय व भावनात्मक सम्बन्ध है। on iFoh ty vUrfj{k o ok; d ifr lefir Hkko vfHkO;Dr djr gA

ofnd lH;rk o lLdfr ikfjfLFkfrdh d lUryu dk cuk, j[ku e i.k l{ke gA वैदिक संस्कृति में ऋतु की अवधारणा के रूप में आदर्श जीवन मूल्यों की अfHkO;fDr g] जिसके अनुसरण में मानव आदर्श जीवनचर्या का आचरण तो करवाती है पर्यावरण की गतिशीलता व नियमबद्धता में भी गतिरोध उत्पन्न नहीं हो पाता।

प्रणेता वेद समस्त विश्व का मान आकर्षित करते है तथा समस्त मानव जाति को बोध djkr g fd i;koj.k d lkFk lUrलन व संगति से ही सुख समृद्धि सुस्वास्थ्य सन्तोष व आयुष्य प्राप्त होगा। मानव यदि पर्यावरण को शुद्ध सन्तुलित व संरक्षित रखेगा तभी इन i;koj.kh; ?kVdk dh noh; pruk, ekuo dk lLokLF; llLdkj nh?kk; o liUurk inku djrh हैं।

vkik okr% iorklk ouLifr% J.kkr; ifFkoh goeA

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1.ऋग्वेद

2.यजुर्वेद

3.अथर्ववेद

4..वेदों में पर्यावरण विज्ञान,डॉ चंद्रशेखर लोखंडे

5.महेंद्र रामचरण,वेदों में पर्यावरण रक्षा

6.पर्यावरण की भारतीय अवधारणा: हरिशंकर शर्मा,सदाचारीसिंह तोमर,देवेन्द्र मोहन,रचना शर्मा